

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल



परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
अर्थशास्त्र	1 4 0	हिन्दी

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक **A - 1088455**

अंकों में परीक्षार्थी का रोल नम्बर

-	2	8	2	5	3	6	9	7	3
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

शब्दों में

दो	आठ	दो	पाँच	तीन	दस	नौ	तीन
----	----	----	------	-----	----	----	-----

एक एक दो चार तीन नौ पाँच छ आठ

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में **03** शब्दों में **तीन**

ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक **3**

ग :- परीक्षा का दिनांक **12 03 18**

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

**HSSC** **C.NO. 252008**

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
Smt. Keena Arniya <i>Keena</i>	<i>23</i>

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

संज्ञापित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई गयी है। स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पुस्तिका पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएँ।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं मुद्रा परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

**Principal**  
**M.S. Parichkha**  
**Nari Shivpuri (M.P.)**

**अमित कुमार जैन**  
वरिष्ठ अध्यापक  
शा. २० मा. वि.

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की विधि करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक	अंकों में
1			
2			
3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			
13			
14			
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24			
25			
26			
27			
28			

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

उप मुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

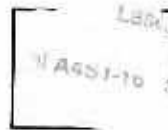
क

3



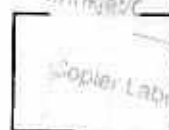
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 3 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न - (1) का उत्तर

(1) रागनर क्रिश्

(2) फर्नीचर

(3) अपूर्ण बाजार

(4) सभी

(5) केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन

प्रश्न - (2) का उत्तर

(i) पुरक

(ii) (बढ़ाया) बढ़ाती है

(iii) संतुलित

(iv) (दृश्य मर्दों) केवल दृश्य मर्दों को

v) निर्यात

4



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 4 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न-(3) का उत्तर

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य असत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

B  
S  
E

प्रश्न-(4) का उत्तर

(अ)

(ब) उत्तर कपूर (i)

(i) इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया - 1912 (1912) (ii)

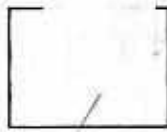
(ii) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया - 1935 1955

(iii) प्राद्वित मुद्रा - संकटकालीन मुद्रा

(iv) चैक - ऐच्छिक मुद्रा

(v) प्रतिस्थापन वस्तुएँ - चाय एवं काफी

5



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 5 के अंक

कुल अंक



न क्र.

प्रश्न-(5) का उत्तर

- (i) आय निर्देशक
- (ii) सापेक्ष माप
- (iii) जीवन विवाह लक्ष्य संकेतक से काल ग्रेसन
- (iv) आर्थिक विकास (नियंत्रण)
- (v) प्रभावपूर्ण मांग

प्रश्न-(6) का उत्तर

पूर्णतया बेलोचदार मांग -

वह मांग कि स्थिति जिसमें कीमत में तो बहुत अधिक परिवर्तन होता है लेकिन मांग में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो पूर्णतया बेलोचदार मांग कहते हैं।

यह मांग एक काल्पनिक मांग है क्योंकि असली जीवन में ऐसा होना सम्भव नहीं है।

6

[ ] 4



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 6 के अंक

कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न - (7) का उत्तर

### राष्ट्रीय आय -

एक देश की 1 वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के अन्तिम मूल्यों का मादिक मूल्य को ही राष्ट्रीय आय कहते हैं।  
 इस देश की।  
 राष्ट्रीय आय को जिस विधि से निकाला जाता है उसे राष्ट्रीय आय लेखांकन विधि कहते हैं।

प्रश्न -

प्रश्न - (8) का उत्तर (अथवा)

### पूर्ण रोजगार

पूर्ण रोजगार से आशय है कि जब देश की क्षम शक्ति तथा उत्पादन शक्ति बराबर होती है अर्थात् जब एक व्यक्ति वर्तमान दरों पर कार्य करने के लिए तैयार होता है व उसे काम मिलता है तो उस स्थिति को पूर्ण रोजगार कहते हैं।

पूर्ण रोजगार = क्षम की क्षमता = उत्पादन क्षमता

B  
S  
E



प्रश्न क्र.

### प्रश्न-(9) का उत्तर (अथवा)

भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना अन्य बैंकों का नियमन व नियंत्रण करने के लिए 1 अप्रैल 1935 को हुई थी तथा 1959 में सका राष्ट्रीयकरण कर दिया गया था।

### प्रश्न-(10) का उत्तर

माध्य विचलन की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

- (1) यह अपकिरण की अन्य मापों की अपेक्षा गणना व समझने में सरल है।
- (2) यह सभी पदों को समान महत्व देता है।  
तथा यह न्यायपूर्ण से भी प्रभावित नहीं होता है।
- (3) इसकी गणना अन्य अपकिरणों की मापों की अपेक्षा सरल है।



प्रश्न क्र.

प्रश्न - (11) का उत्तर

माँग का नियम -

प्रो. मार्शल के अनुसार

" यदि अन्य बातें समान रही रहती हैं तो वस्तु के मूल्य में वृद्धि होने पर उसकी माँग कम हो जाती है, तथा कीमत कम होने पर माँग बढ़ जाती है। "

B  
S  
E

प्रश्न - (12) का उत्तर

माँग को प्रभावित करने वाले प्रमुख तीन कारक निम्नलिखित हैं -

(1) वस्तु की कीमत -

वस्तु की कीमत सबसे अधिक माँग को प्रभावित करती है। वस्तु की कीमत बढ़ने पर माँग कम हो जाती है तथा कीमत घटने पर माँग बढ़ जाती है।



(2) उपभोक्ता की आय -

उपभोक्ता की आय भी मांग को प्रभावित करती है। अन्य बातें समान रहने पर उपभोक्ता की आय में वृद्धि होने पर मांग बढ़ जाती है तथा आय कम होने पर मांग घट जाती है। यहाँ अन्य बातें समान रहने में आशय उपभोक्त की रुचि, फैशन आदत से है।

(3) जनसंख्या वृद्धि - / कमी -

जनसंख्या वृद्धि या कमी भी मांग को प्रभावित करती है। जैसे किसी देश की जनसंख्या ज्यादा हो वहाँ पर बच्चों की संख्या अधिक होगी जिसके कारण रिक्वायर्स, बच्चों के कपड़े आदि की मांग बढ़ेगी।

तथा जब किसी देश की मृत्यु दर ज्यादा हो वहाँ पर बुजुर्गों की संख्या ज्यादा होने के कारण नजर के चश्मे व दवा आदि की मांग बढ़ेगी।



10



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 10 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न (13) का उत्तर (5)

निर्देशांक की कोई तीन सीमायें लिखिए

(1) सापेक्ष माप - निर्देशांक केवल परिवर्तन की सापेक्ष माप को ही व्यक्त करते हैं न कि इस परिवर्तन की वास्तविक माप को बताते हैं।

(2) माह्यों की सीमायें - निर्देशांक संभावित माह्यों महियुक्त व अन्य रीतियों से बनाये जाते हैं जिसके कारण स. इन रीतियों का प्रभाव निर्देशांक पर भी पड़ता है।

(3) अव्यवहारिक - निर्देशांक अव्यवहारिक होते हैं क्योंकि यह समग्र के कुछ सैम्पल को चुनकर बनाये जाते हैं। इसलिए निर्देशांक को अव्यवहारिक कहना उचित है।

11



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 11 के अंक

=



कुल अंक



न क्र.

प्रश्न-(14) का उत्तर

विस्तार के कोई तीन गुण निम्न प्रकार से हैं-

(1) यह गणना करने में बहुत सरल है।

(2) इनकी गणना करने के लिए गणित के विशेष की आवश्यकता है नहीं होती है।

(3) यह न्यायदर्शी से प्रभावित नहीं होते हैं। व सामान्य व्यक्ति भी इसकी गणना कर सकता है।

प्रश्न-(15) का उत्तर (अथवा)

'एकाधिकार' की कोई चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) एक विक्रेता - एकाधिकार में वस्तु का केवल एक ही विक्रेता होता है व उसका वस्तु की पूर्ण पर पूरा नियंत्रण रहता है।

(2) स्थापित वस्तुओं का अभाव - एकाधिकार बाजार में एकाधिकारी की वस्तु

12

$$\square + \square = \square$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 12 के अंक

कुल अंक



के निकट स्थापित वस्तु का अभाव  
पाया जाता है।

### (3) पूर्ति पर नियंत्रण -

एकाधिकार बाजार में वस्तु का  
विक्रेता वस्तु पर पूर्ण नियंत्रण  
रखता है। तथा वह अकेले ही  
वस्तु की पूर्ति को प्रभावित  
कर सकता है।

### (4) कीमत विभेद -

एकाधिकार बाजार में वस्तु के  
विक्रेता का वस्तु की पूर्ति  
पर पूर्ण नियंत्रण होने के  
कारण वह वस्तु को अधिक  
पर भी बेचता है।  
अतः कीमत विभेद संभव है।

$$\boxed{\phantom{00}} + \boxed{\phantom{00}} = \boxed{\phantom{00}}$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 13 के अंक

कुल अंक



प्रश्न-(15) का उत्तर (अथवा)

व्यक्ति एवं समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर  
निम्नलिखित हैं -

व्यक्ति अर्थशास्त्र

समष्टि अर्थशास्त्र

1) व्यक्ति अर्थशास्त्र में दो-दो भागों का अध्ययन किया जाता है।

1) समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण का योग का अध्ययन करती है।

2) व्यक्ति अर्थशास्त्र के द्वारा एक व्यक्ति की आर्थिक नीति बनवाई जा सकती है।

2) समष्टि अर्थशास्त्र द्वारा सम्पूर्ण समाज की नीति बनवाई जा सकती है।

3) व्यक्ति अर्थशास्त्र एक व्यक्ति विशेष के लिए या एक विशेष के लिए मददगार है।

3) समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण समाज व राष्ट्रीय आय, मौद्रिक नीति के लिए विशेष मददगार है।

4) व्यक्ति अर्थशास्त्र का मुख्य "कीमत धर्म" होता है।

4) समष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य "राष्ट्रीय आय" व "रोजगार" नीति आदि होती है।



15



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 15 के अंक

कुल अंक



श्न क्र.

गुण होना चाहिए जिससे जनता विद्ये के परेशानी मुद्रा को कर सके।

प्रश्न - (18) का उत्तर

भारत में भुगतान संतुलन की प्रतिक्षलता के प्रमुख कारण निम्नलि हैं -

(1) पेट्रोलियम पदार्थों की मात्रा में वृद्धि -

भारत में गत वर्षों में पेट्रोलियम व पेट्रोलियम पदार्थों की मात्रा में बहुत अधिक वृद्धि हुई है तथा तेल निर्यातक देशों प्रतिवर्ष तेलों व पेट्रोल की कीमत में वृद्धि कर रहे हैं जो भुगतान संतुलन में प्रतिक्षलता का कारण है।

(2) मशीनों व पूँजीगत सामान -

भारत में आर्थिक नियोजन के कारण कृषि व उद्योगों के लिए भारी व हल्के मशीनों का बढुयातायात में आयात किया जाता है जो भुगतान असंतुलन का कारण है।

16

$$\boxed{\phantom{000}} + \boxed{\phantom{000}} = \boxed{\phantom{000}}$$

योग

पृष्ठ



प्रश्न क्र.

(8) आशा अनुसार निर्यातों में वृद्धि नहीं

भारत में जिस आशा के अनुसार  
 में वृद्धि करने के प्रयास किये  
 जा रहे हैं लेकिन निर्यात  
 इस अनुपात में नहीं बढ़ पा  
 रहे।

(9) जनसंख्या वृद्धि

भारत में जनसंख्या बहुत तीव्र  
 गति से बढ़ रही जिसके  
 कारण निर्यातों का अधिकांश  
 जनसंख्या के भरण-पोषण पर  
 ही चला जाता है जो कुशल  
 सुसंतुलन का एक समुच्चय कारण  
 है।

B  
S  
E

REGULATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION  
 REGULATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

[ ] + [ ] = [ ]

यों ... पृष्ठ 17 के अंक



प्रश्न - (19) का उत्तर

एक अच्छी कर प्रणाली की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

(1) करारोपण के सिद्धान्तों के अनुरूप -

एक अच्छी कर प्रणाली की एक विशेषता यह होती है कि वह करारोपण के सिद्धान्तों पर जैसे सुविधा का सिद्धान्त, निश्चिन्ता का सिद्धान्त, उत्पादकता का सिद्धान्त के अनुरूप हो।

(2) सुविधाजनक -

एक अच्छी कर प्रणाली की एक विशेषता है कि वह सुविधाजनक होनी चाहिए अर्थात् व्यक्तियों को कर भरने के स्वरूप व लगे तथा व्यक्तियों से कर उस समय वसूले जाये जब उन्हें कर देने में असुविधा न हो।

जैसे - किसान से कर जब लिया जाये जब उसकी फसल कटती है।



18



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 18 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

(3) निश्चिता का सि होना -

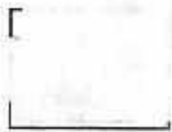
एक अच्छी कर प्रणाली की एक विशेषता यह होती है कि उनमें कर की दर निश्चित (1) होनी चाहिए तथा व्यक्तियों को पता होना चाहिए कि उन्हें कितना व्यय करना है।

B  
S  
E

(4) मित्तव्ययिता का होना -

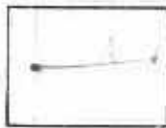
एक अच्छी प्रणाली की एक विशेषता मित्तव्ययिता की होती है अर्थात् व्यक्तियों द्वारा किये जाने वाले व्ययों की कुलना में उसे लाभ अधिक प्राप्त होना है।

कर प्रणाली इस प्रकार की होनी चाहिए जिसमें करों को एक करने में व्यय कम व आय अधिक प्राप्त हो।



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 19 के अंक

=



प्रश्न-(20) का उत्तर

अपकिरण — अपकिरण के द्वारा पदों के बीच पाई जानी वाली विचरणशीलता का अध्ययन किया जाता है।

प्रो वाऊले के अनुसार

"पदों के विचरण का माप ही अपकिरण है।"

अपकिरण के 3 उद्देश्य विंगलि हैं—

(1) पदों की विचरणशीलता को तुलना करना—

अपकिरण के द्वारा ज्यों दो या दो से अधिक पदों के बीच पायी जाने वाली विचरणशीलता का अध्ययन किया जाता है।

(2) विरवराव व फैलाव का अध्ययन—

अपकिरण के द्वारा माध्य के ऊपर व नीचे पाये गए जाने वाली पदों का अध्ययन किया जाता है। तथा पदों की विचरणशीलता को नियंत्रित किया जाता है।

$$\boxed{\phantom{00}} + \boxed{\phantom{00}} = \boxed{\phantom{00}}$$

योग पूर्व पृष्ठ                      पृष्ठ 20 के अंक                      कुल अंक



(3) एकरूपता का अध्ययन-

अपुकिरण के द्वारा समूह में पायी जाती  
माने वाली एकरूपता का अध्ययन  
उसका किया जाता है।

L  
B  
S  
E

प्रश्न-(21) का उत्तर (अथवा)

सहसंबंध - दो चरों के मध्य पाये जाने  
गुणात्मक सम्बन्धों को ही सहसम्बन्ध  
कहते हैं।

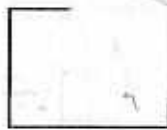
एक चर मूल्य में परिवर्तन का दूसरे  
चर मूल्य पर क्या प्रभाव पड़ता है  
इसका अध्ययन करना सहसम्बन्ध  
कहलाता है।

धनात्मक सहसंबंध -

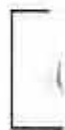
जब दो चरों में परिवर्तन की  
दो दिशा समान होती है तो  
उसे धनात्मक सहसम्बन्ध  
कहते हैं।



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 21 के अंक



अर्थात् एक चर मूल्य में वृद्धि या कमी होने पर दूसरे चर मूल्य में वृद्धि या कमी हो जाती है। उसे धनात्मक सहसम्बन्ध कहते हैं।

उदाहरण - पूर्ति की मूल्य में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

प्रश्न-22 का उत्तर

माँग की लोच को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं-

(1) वस्तु का स्वभाव - वस्तु का स्वभाव भी माँग की लोच को प्रभावित करता है। अनिवार्य वस्तुओं की माँग की मूल्य में परिवर्तन होने पर भी अप्रभावित होती है। अनिवार्य वस्तुओं की माँग बलवान होती है जैसे - गेहूँ, चावल, दालें आदि।

तथा विनाशिता से सम्बन्ध रखने वाली वस्तुओं की माँग लोचदार होती है क्योंकि इनकी कीमत बढ़ने पर उनकी माँग घट जाती है।

$$\boxed{\phantom{000}} + \boxed{\phantom{000}} = \boxed{\phantom{000}}$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 22 के अंक



संक्र.

### (2) वस्तु का प्रभाव -

माँग की लोच पर वस्तु के प्रयोग का भी प्रभाव पड़ता है।

सामान्यतः जिन वस्तुओं का प्रयोग कार्यों में किया जाता है उनकी माँग की लोच लोचदार होती है।

जैसे- बिजली का प्रयोग रसोई, ईंधन, टी.वी, फ्रिज, रेडियो, टेलीफोन पानी गर्म करने में किया जाता है। जब बिजली की कीमते थोड़ा सा भी परिवर्तन होता है, या बढ़ि होती है तो लोगो द्वारा केवल जरूरी कार्यों ही इसका प्रयोग किया जाये।

इस प्रकार इन वस्तुओं की माँग की लोच जिनका प्रयोग उनके प्रकार से किया जाता है उनकी माँग की लोच लोचदार होती है।

### (3) उपभोक्ता की आर्थिक स्थिति

माँग की लोच पर उपभोक्ता की आर्थिक स्थिति का भी प्रभाव पड़ता है।

23

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

योग पूर्व ५

पृष्ठ 23 के अंक

कुल ०.



3

सामान्य रूप से गरीबों के लिए माँग की अत्यधिक लोचदार होती है तथा अमीरों के लिए माँग की लोच बल्लोचदार होती है।

(प) भविष्य में स्थगित करने की सम्भावना सम्भावना -

जिन वस्तुओं के प्रयोग को भविष्य के लिए स्थगित किया जा सकता है उनकी माँग की लोच लोचदार होती है जैसे - जूते, हाते, टिटर आदि इन वस्तुओं के बिना भी लोग अपना काम चला लेंगे।

इसके विपरीत जिन वस्तुओं की के उपभोग को स्थगित नहीं किया जा सकता है उनकी माँग की लोच बल्लोचदार होती है। जैसे - गेहूँ, चावल, बसक आदि।

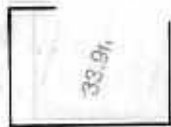
(ड) संयुक्त माँग -

जिन वस्तुओं की माँग की मर साथ-साथ की जाती है उन्हें संयुक्त माँग वाली वस्तुये या पूरक वस्तुएँ कहते हैं। इनकी माँग बल्लोचदार होती है।

24



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुछ



क्योंकि एक के मूल्य में वृद्धि/कमी  
दूसरे के मूल्य में कमी/वृद्धि  
कर देता है।

जैसे - कारक व पेट्रोल पुरक बरतुपें  
है यदि कार की कीमत बढ़  
जाती है तो पेट्रोल की मांग  
कोई बढ़ी करेगा। अर्थात् पेट्रोल  
की मांग कम हो जायेगी।

प्रश्न-(23) का उत्तर

भारत में राष्ट्रीय आय के धीमी गति  
से वृद्धि के समुच्चय कारण निम्नलि

(1) प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण उपयोग न  
कर पाना -

भारत में राष्ट्रीय आय में कमी का  
एक कारण प्राकृतिक संसाधनों का  
पूर्ण रूप से उपयोग नहीं किया  
जा रहा है जिसके कारण राष्ट्रीय  
आय कम रह जा रही है।



परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय

विषय कोड

परीक्षा का माध्यम

परीक्षा का दिनांक

12 3 18

मध्यशास्त्र

140

हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगाएँ

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →



परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केंद्र क्रमांक की मुद्रा

HSSC

252008

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

Shri Reena Arhigg  
Droeng

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

Handwritten signature

मुख्य उत्तर पुस्तिका के आतम पृष्ठ क्रमांक 24 to 28 तक कुल प्राप्तांक

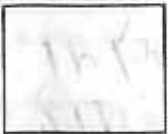
Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 381x33.9mm

(2) उपपात आधागाक -

B  
S  
E

भारत में आज भी भारी तथा पूंजीगत भी कमी है तथा आवश्यकता के अनुसार औद्योगिक विकास नहीं हुआ है। जिसके कारण राष्ट्रीय आय कम रह जाती है।

(3) जनसंख्या वृद्धि -



पृष्ठ के अंकों का योग

भारत में जनसंख्या में बहुत तेजी से वृद्धि हो रही जहाँ 1951 में देश की जनसंख्या 360.7 करोड़ थी वहीं 2011 में देश की जनसंख्या 121,56,95,73 करोड़ हो गयी। जनसंख्या की इतनी तेजी से बढ़ने के कारण अधिकांश





साधन देश की जनसंख्या के भारण -  
पोषण में लग जाते हैं जिसके  
कारण राष्ट्रीय आय कम रह जाती है।

(4) औद्योगिक क्षेत्रों द्वारा अपनी क्षमता का  
पूर्ण उपयोग न कर पाना -

भारत में आज भी आधुनिक मशीनों  
व कुशल श्रम शक्ति के अभाव के  
कारण उद्योग अपनी क्षमता का  
पूर्ण उपयोग नहीं कर पाते हैं  
जिसके कारण राष्ट्रीय आय कम  
रह जाती है।

(5) कृषि पर निर्भरता -

भारत में आज भी राष्ट्रीय आय का  
लगभग 19% कृषि से प्राप्त होती  
है भारतीय कृषि मानसून का  
जुआ कही जाती है तथा कृषि  
को आज भी भारतीय कृषक  
परम्परागत रीतियों से करते हैं  
जिसके कारण उत्पादन कम होता  
है तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि  
धीमी गति से होती है।



## प्रश्न-(24) का उत्तर (अथवा)

न्यून (अभावी) माँग के प्रमुख कारण व परिभाषा निम्नलिखित हैं -

॥ अभावी माँग से आशय जब कुल माँग कुल पूर्ति से कम होती है तो उसे अभावी माँग कहते हैं। इस स्थिति में अनैच्छिक बेरोजगारी फैलती है। ॥

अभावी माँग के कारण निम्नलिखित हैं -

(1) सार्वजनिक व्यय में कमी -

जब सरकार देश के सार्वजनिक व्यय में कमी करती है तो अर्थव्यवस्था को मुद्रा कम प्राप्त होती है तथा माँग भी कम हो जाती है।

(2) मुद्रा की मात्रा में कमी -

जब की सरकार वर्तमान मुद्रा की मात्रा में कमी करती है तब अभावी माँग की स्थिति उत्पन्न होती है।



(3) ऋण दरों में वृद्धि -

जब केंद्रीय बैंक द्वारा ऋण दरों में परिवर्तन कर उन्हें बढ़ा दिया जाता है तो इससे सार्व की मात्रा घट जाती है। व उधार प्रक्रिया जटिल हो जाती है जिससे मुद्रा की मात्रा कम हो जाती है।

(4) करों में वृद्धि -

जब देश की सरकार वर्तमान करों में वृद्धि तथा नई कर लगाने पर लागू करती है तो इससे लोगों की क्रयशक्ति व मांग घट जाती है। जिससे सामूहिक मांग कम हो जाती है।

(5) केंद्रीय बैंक द्वारा सार्व नियंत्रण

जब देश की केंद्रीय बैंक द्वारा सार्व नियंत्रण किया जाता है तो इससे इससे सामूहिक मांग कम हो जाती है।



परीक्षार्थी द्वारा भरा जाये ↓

विषय कोड

परीक्षा का माध्यम

परीक्षा का दिनांक

12 | 3 | 18

परीक्षा का विषय

अर्थशास्त्र

140



परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक को मुद्रा

HSSC

C.NO: 252008

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

Smt. Reena Athiyaya

Reena

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

[Signature]

परीक्षार्थी द्वारा भरा जाये →

मुख्य उत्तर पुरतिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक 24 से 22 तक कुल प्राप्त

तथा बेरोजगारी व आर्थिक विकास अवरोध हो जाती है।

B  
S  
E

केन्द्रीय बैंक द्वारा सार्व पर नियंत्रण न्यूनतम कोषानुपात पूर्णाली में परिवर्तन, व्याज दरों में परिवर्तन करके सार्व की नियंत्रण द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

पृष्ठ के अंकों का योग



## प्रश्न-(25) का उत्तर

बजट - बजट से आशय है कि एक वर्ष में सरकार के आय व्यय के समायोजन सम्बन्धित होता है।

"सरकार का बजट एक वर्ष में सरकार की आय-व्यय के वित्तीय समायोजन से सम्बन्धित होता है।"

बजट के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

### (1) आर्थिक संकुचन सुदृढ़ता -

बजट का उद्देश्य होता है कि देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करना होता है। जिससे आंतरिक व बाहरी समस्याओं का देश पर कोई प्रभाव न पड़े।

### (2) आर्थिक विकास -

बजट का उद्देश्य होता है कि देश

का हर क्षेत्र जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, औद्योगिक, आदि स्तरों का विकास बजट का मुख्य उद्देश्य होता है।

### (3) औद्योगिक विकास -

बजट का एक यह भी उद्देश्य यह भी होता है कि देश का औद्योगिक विकास करना इसलिए बजट अल्पकालिक व दीर्घकालिक विनियोगों द्वारा औद्योगिक विकास बढ़ाने के प्रयास किये जाते हैं।

### (4) कृषि विकास -

बजट में कृषि से सम्बन्धित वस्तुओं का मूल्य भी विरचित होता है तथा बजट में कृषि से सम्बन्धित सभी वस्तुओं के का विवरण कर उनके विकास के प्रावधान होते हैं।

### (5) सौजन्य -

बजट में सार्वजनिक निर्माण कार्य तथा



सार्वजनिक विनियोगों को बढ़ाकर और  
राजगार को अवसरों को बढ़ाने  
के सावधान किये जाते हैं।

प्रश्न-(26) का उत्तर (अपना)

निर्देशों की प्रमुख पांच विशेषताएँ  
लिखें -

(1) संख्या द्वारा व्यक्त - निर्देशों की  
हमेशा संख्या  
द्वारा ही व्यक्त किया जाता है।  
निर्देशों में परिवर्तन की दिशा  
की शब्दों के स्थान पर संख्याओं  
में व्यक्त किया जाता है।

(2) मुख्य सापेक्ष माप - निर्देशों द्वारा  
संकेतों को सापेक्ष  
रूप में ही मापा जाता है। क्योंकि  
निरपेक्ष रूप में तुलना योग्य नहीं  
होते हैं। इसलिए निर्देशों  
हमेशा संकेतों के परिवर्तन को  
सापेक्ष रूप में ही मापना है।

# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल



परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का माध्यम

परीक्षा का दिनांक

12 | 3 | 18

परीक्षा का विषय

विषय कोड

हिन्दी

140

हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केंद्र क्रमांक की मुद्रा

HSSC

परीक्षा केंद्र क्रमांक: 252008

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

Smt Reena Athiya

*Reena*

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

*[Signature]*

+  -  =

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे



मुख्य उत्तर पुस्तिका के आत्म पृष्ठ क्रमांक 24, 25, 26 तक कुल प्रश्नांक

## (3) परिवर्तन का आधार -

B  
S  
E

निर्देशों की गणना मुख्यतया दो आधार पर की जाती है

- ① समय
- ② स्थान

समय के आधार पर गणना करते समय विशेष अवधि, समय, पूर्ण, दिन, महीना, साल आदि को आधार माना जाता है।



पृष्ठ के अंकों का योग

स्थान को आधार मानते हैं समय किसी भू-भाग को आधार मानकर परिवर्तन को मापा जाता है।



सामान्यतः समय को ही आधार माना जाता है।

(प) औसत प्रवृत्ति -

निर्देशांक परिवर्तन की दिशा को औसत रूप में व्यक्त कर करते हैं।

औसत मुख्य रूप से संसार, मध्यिका आदि की सहायता से निकाली जाती है।

(इ) निर्देशांक किसी विशेष समूह की व्याख्या न समग्र समूहों की व्याख्या करते हैं।

(उ) माध्य विशेष का अध्ययन -

निर्देशांक के सम्बन्ध में प्रो. वाजले ने कहा है कि

प निर्देशांक एक विशेष प्रकार के माध्य हैं होते हैं।

निर्देशांक में माध्य अनेक विधियों के निकाला जाता है।  
निर्देशांक में माध्यों का अध्ययन व विवरण किया जाता है।

### (6) व्यापकता -

निर्देशांक की एक अन्य विशेषता व्यापकता है इसमें सभी समूहों का अध्ययन व्यापकता व विश्लेषण से किया जाता है।

जैसे क्रमिक से सम्बन्धित निर्देशांक क्रमिक से सम्बन्धित सभी प्रकार वस्तुओं का व्यापकता से साथ किया जाता है।

END